इकाई 1 शिक्षा के क्षेत्र में ज्योतिष की उपयोगिता

इकाई की रूपरेखा

1.1 उद्देश्य

1.2 प्रस्तावना

1.3 शिक्षा के क्षेत्र में ज्योतिष की उपयोगिता

1.3.1 ज्योतिष शास्त्र का परिचय एवं महत्व

1.3.2 शिक्षा का अर्थ एवं महत्व

1.3.3 शिक्षा एवं ज्योतिष का अन्तः सम्बन्ध

1.4 शिक्षा के क्षेत्र में ज्योतिष की भूमिका

1.4.1 ज्योतिष का शैक्षणिक महत्व एवं उपयोग

1.5 सारांश

1.6 शब्दावली

1.7 बोध प्रश्न

1.8 उपयोगी पुस्तकें

1.1 उद्देश्य

प्रस्तुत इकाई के अध्ययन के पश्चात आपः

- ज्योतिष शास्त्र के महत्व से अवगत होंगे।
- शिक्षा के स्वरूप एवं वास्तविक अर्थ को जानेंगे।
- ज्योतिष एवं शिक्षा के पारस्परिक संबंध के बारे में जानेंगे।
- ज्योतिष शास्त्र में विद्यमान शैक्षिक तत्वों का ज्ञान होगा।
- विषय चयन में ज्योतिष के महत्व से अवगत होंगे।

1.2 प्रस्तावना

प्रस्तुत इकाई का शीर्षक **"शिक्षा के क्षेत्र में ज्योतिष की उपयोगिता"** है।आप सभी ज्योतिष शास्त्र में विशेष रुचि रखते हैं ऐसा मेरा विश्वास है। ज्योतिष शास्त्र एक प्रत्यक्ष शास्त्र है जो की समाज के प्रत्येक व्यक्ति के लिए आदि काल से ही अत्यंत उपयोगी रहा है। ज्योतिष शास्त्र के द्वारा काल ज्ञान, विभिन्न मुहूर्त, शुभाशुभ सूचनाओं का ज्ञान किया जाता है। मानव जीवन में ऐसे कई ऐसे प्रश्न होते हैं जिनके समाधान के लिए ज्योतिष शास्त्र की महत्वपूर्ण भूमिका रहती है। मानव के लिए शिक्षित होना बहुत आवश्यक है क्योंकि शिक्षा के अभाव में जीवन अत्यंत कठिन होता है। समाज में एक सभ्य, सुसंस्कृत एवं जिम्मेदार नागरिक बनाने में शिक्षा की महत्वपूर्ण भूमिका हैं। आज के आर्थिक एवं प्रतिस्पर्धा के इस युग में उचित एवं सही माध्यम या विषय चयन कर अच्छे परिणाम प्राप्त किये जा सकते हैं। किसी व्यक्ति के जीवन में शिक्षा का स्तर क्या रहेगा अर्थात् उच्च शिक्षा या सामान्य शिक्षा ग्रहण करेगा या उसका पढाई के प्रति क्या रूझान हैं यह ज्योतिष शास्त्र के माध्यम से जाना जा सकता है। अधिकांश

अभिभावकों एवं विद्यार्थियों की चिंता यही रहती हैकि क्या पढा जाएं? ताकि अच्छा भविष्य निर्मित हो सके। आज के युग को देखते हुए ज्योतिष के माध्यम से शिक्षा का चयन अत्यंत उपकारक है। साथ ही ज्योतिष में शिक्षा विषयक विभिन्न विषयों का समावेश है। अतः प्रस्तुत इकाई के माध्यम से हम शिक्षा के क्षेत्र में ज्योतिष की उपयोगिता के बारे में विस्तार से जानेंगे ।

1.3 शिक्षा के क्षेत्र में ज्योतिष की उपयोगिता

यथा शिखा मयूराणां नागानां मणयो यथा।
तद्वद्वेदाङ्गशास्त्राणां ज्यौतिषं मूर्धनि स्थितम्। ।

(वेदांग ज्योतिष, याजूष ज्योतिष 5)

जिस प्रकार से मयूरों की शिखा उनके शिरो देश में स्थित रहती है और जिस प्रकार नागों की मणियाँ भी उनके सिरस्थ देश में रहती हैं, उसी प्रकार वेदांगों (शिक्षा, कल्प, निरुक्त, व्याकरण, छन्द तथा ज्योतिष)—में ज्योतिष शास्त्र सबसे ऊपर स्थित है। ज्योतिष शास्त्र की महत्ता एवं उपयोगिता मानव जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में है । शिक्षा के क्षेत्र में तो ज्योतिष अत्यंत उपकारक हैं। हम सभी जानते हैं की जीवन में शिक्षा का कितना महत्व है शिक्षा विहीन मनुष्य पशु तुल्य माना जाता है। इसी शिक्षा के चयन एवं अन्यान्य विषयों में ज्योतिष शास्त्र की उपयोगिता को हम प्रस्तुत इकाई के माध्यम से जानेंगे।

1.3.1 ज्योतिष शास्त्र का परिचय एवं महत्व

संसार के अविरल प्रवाह को प्रवाहित करने वाले निःशेष ज्ञान के आदि स्तोत्ररुपी वेदपुरुष के विशालकाय शरीर में **'वेदचक्षुः किलेदंस्मृतं ज्यौतिषम्'** (सिद्धान्तशिरोमणि, काल० ११) इत्यादि वाक्यों के द्वारा नेत्ररुप में ज्योतिष शास्त्र परिलक्षित है।सामान्य परिभाषा के अनुसार ज्योतिषशास्त्र को ग्रह—नक्षत्रों की गति, स्थिति एवं फलसे सम्बन्धित शास्त्र कहा जाता है, जैसा कि नृसिंहदैवज्ञ ने भी कहा है—

'ज्योतींषि ग्रहनक्षत्राण्यधिकृत्य कृतो ग्रन्थो ज्योतिषम्'

ग्रह—नक्षत्रों के द्वारा हमें काल का ज्ञान होता है एवं इस चराचर जगत् में सबसे अधिक शाश्वत् एवं गतिशील वस्तु काल ही है।इसी के अंतर्गत संसारके सभी क्रियाकलाप कार्यान्वित होते है। काल के अनुसार ही प्राणिमात्र का जन्म एवं कालानुरोधेन ही अन्त होता है, जैसा कि वर्णन भी प्राप्त है—**'कालः सृजति भूतानि कालः संहरते प्रजाः।'** हमारी भारतीय संस्कृति में वेदविहित यज्ञादि शुभ कार्यों की समग्र व्यवस्था वेदांग शास्त्रों के माध्यम से सम्पादित होती है, जिसमें यज्ञादि कार्यों की सफलता शुभ कालाधीन तथा शुभ कालज्ञान की व्यवस्था ज्योतिषशास्त्राधीन होने से ही इसे वेदपुरुष के नेत्ररुप में प्रतिष्ठित किया गया है —

वेदा हि यज्ञार्थमभिप्रवृताः कालानुपूर्वा विहिताश्च यज्ञाः ।
तस्मादिदं कालविधानशास्त्रं यो ज्योतिषं वेद स वेद यज्ञम् ।।

(सिद्धान्त शिरोमणि मध्यामाधिकार श्लोक 09)

अतः ज्योतिष शास्त्र कीसार्वभौम उपयोगिता तथा महत्ता स्वयं ही सिद्ध होती है। वर्तमान विज्ञान के गणित आदि प्रायः सभी विषय बीजस्वरूप ज्योतिष शास्त्र में अन्तर्निहित हैं। भारतीय परम्परा के अनुसार इस प्राचीन वैज्ञानिक शास्त्र की उत्पत्ति

ब्रह्माजी के द्वारा हुई है। ऐसा माना जाता है कि ब्रह्माजी ने सर्वप्रथम नारद को ज्योतिष शास्त्र का ज्ञान प्रदान किया तथा नारदजी ने इस लोकमें ज्योतिष शास्त्र का प्रचार–प्रसार किया। मतान्तर से ऐसा भी स्पष्ट उल्लेख प्राप्त होता है कि इस शास्त्र का ज्ञान भगवान् सूर्य ने मयासुर को प्रदान किया। अष्टादश आचार्यों को ज्योतिष शास्त्र का प्रवर्तक माना जाता है –

सूर्यः पितामहो व्यासो वसिष्ठोऽत्रिः पराशरः
कश्यपो नारदो गर्गो मरीचिर्मनुरंगिराः।
रोमशः पौलिशाश्चैव च्यवानो यवनो भृगुः
शौनेकोऽष्टादशाश्चैते ज्योतिः शास्त्रप्रवर्तकाः।।

(काश्यप संहिता)

ज्योतिष शास्त्र के भेद– ज्योतिष शास्त्र के सिद्धांत–संहिता–होरारुपी तीन विभाग प्राचीनकाल से आचार्यों ने उपस्थापित किये है। वराहमिहिर ने **'ज्योतिषशास्त्रमनेकभेदविषयं स्कन्धत्रयाधिष्ठितम्'** कहते हुए स्कन्दत्रयात्मक ज्योतिष शास्त्र को अनेक भेदों से युक्त माना है। कुछ आचार्यों ने केरलि एवं शकुन का पृथक ग्रहण करते हुए इस शास्त्र को पंचस्कंधात्मक माना है ।

पञ्चस्कंधमिदं शास्त्रं होरागणित संहिताः ।
केरलिः शकुनश्चैव ज्योतिः शास्त्रमुदीरितम् ।।

परन्तु केरलि एवं शकुन का भी होरा एवं संहिता स्कन्ध के अंतर्गत ही सन्निवेश होने के कारण मुख्यतया उसके तीन ही विभाग परंपरा में प्राप्त होते है । इसके अतिरिक्त विषय–विभाजन की दृष्टि से कुछ आचार्यों ने इसके छः अंगो की भी चर्चा की है, परन्तु वस्तुतः सिद्धांत,संहिता, होरा स्कन्द के अंतर्गत ही ज्योतिष के सभी विषय समाहित होते है अतः प्राचीन काल से लेकर अर्वाचीन काल तक के आचार्यों ने ज्योतिष के तीन स्कन्धों को ही परिगणित किया है ।

भारतीय दर्शन में 'कर्मवाद' का महत्वपूर्ण स्थान है। जिसके अनुसार संसार में प्राणी अनवरत कर्म में ही निरत रहता है। वह चाह कर भी इससे अलग नहीं हो सकता है। कर्म करने पर उसका फल अवश्य ही भोगना पड़ता है। आत्मा अजर एवं अमर है परन्तु कर्मबन्धन के फलस्वरूप उसे पुनर्जन्म लेना पड़ता है। कर्मबन्धन से मुक्ति केवल तभी मिल सकती है जब मनुष्य को आत्मज्ञान या ब्रह्मज्ञान हो जाता है। प्राणी के शुभाशुभ कर्मों का फल उसे वर्तमान जीवन में कब, कहाँ और किस रूप में प्राप्त होगा, इत्यादि समस्त जिज्ञासाओं का उत्तर जानने का एकमात्र उपकरण ज्योतिष शास्त्र है। इसका मुख्य कार्य ग्रह नक्षत्रों की गतिस्थित्यनुसार कुण्डली निर्माण कर जातक के जीवन में आने वाले सुख दुःखादि का अनुमान कर उसे अपने कर्तव्यों द्वारा अपने अनुकूल बनाने के लिए प्रेरित करना है। यही प्रेरणा मानव के लिए दुःखों को दूर करने का कार्य करती है एवं पुरुषार्थ साधक होती है।

1.3.2 शिक्षा का अर्थ एवं महत्व

शिक्षा शब्द का निर्माण संस्कृत भाषा के **'शिक्ष्'** धातु से हुआ है। 'शिक्ष' शब्द का शाब्दिक अर्थ होता है सीखना और सिखाना । अर्थात् सीखने–सिखाने की क्रिया को 'शिक्षा' कहा जाता है। शिक्षा किसी भी मानव को एक अच्छा मानव बनाने में सहायक होती है। शिक्षा में , शिक्षण ज्ञान, उचित आचरण और तकनीकी दक्षता, और विद्या प्राप्ति आदि सम्मिलित हैं। इस प्रकार शिक्षा कौशलों, व्यापारों या व्यवसायों एवं मानसिक, नैतिक और सौन्दर्यविषयक के उत्कर्ष पर केंद्रित है। शिक्षा, इस समाज को

एक पीढ़ी द्वारा अपने से निचली पीढ़ी को अपने द्वारा अर्जित ज्ञान के हस्तांतरण का प्रयास है। इस विचार से हम यह कह सकते हैं कि शिक्षा एक संस्था के रूप में काम करती है, जो व्यक्ति विशेष को समाज से जोड़ने में अत्यंत महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाती है साथ ही साथ समाज की संस्कृति को निरंतर बनाए रखती है। शिक्षा को और अधिक स्पष्ट रूप से समझे तो यह व्यक्ति की अंतर्निहित क्षमता तथा उसके व्यक्तित्त्व का विकसित करने वाली प्रक्रिया है। यही प्रक्रिया उसे समाज में एक जिम्मेदार नागरिक बनने के लिए व्यक्ति को आवश्यक ज्ञान तथा कौशल प्रदान करती है।

इसी क्रम में व्यापक अर्थ में शिक्षा के स्वरूप को यदि हम समझने का प्रयास करें तो शिक्षा समाज में निरंतर चलने वाली एक उद्देश्यपूर्ण सामाजिक प्रक्रिया है जिसके द्वारा मनुष्य की जन्मजात शक्तियों का विकास, उसके ज्ञान एवं कौशल में वृद्धि तथा व्यवहार में परिवर्तन किया जाता है और उसे सभ्य, सुसंस्कृत एवं योग्य नागरिक बनाया जाता है। मनुष्य प्रतिपल नए–नए अनुभव प्राप्त करता है व करवाता है, जिससे उसका दिन–प्रतिदन का व्यवहार प्रभावित होता है। उसका यह सीखना–सिखाना विभिन्न उत्सवों, पत्र–पत्रिकाओं, समूहों, रेडियो, टी वी आदि से अनौपचारिक रूप से होता है। यही सीखना–सिखाना शिक्षा के व्यापक तथा विस्तृत रूप के अंतर्गत आते हैं। इसी क्रम में संकुचित अर्थ में शिक्षा को यदि समझा जाये तो शिक्षा किसी समाज में एक निश्चित समय या कालखण्ड में तथा निश्चित स्थानों जैसे विद्यालय या महाविद्यालय में नियोजित रूप से चलने वाली एक उद्देश्य पूर्ण सामाजिक प्रक्रिया है जिसके द्वारा विद्यार्थी एक निश्चित पाठ्यक्रम या विषय को पढ़कर संबंधित परीक्षाओं को उत्तीर्ण करना सीखता है।

शिक्षा की विभिन्न परिभाषाएँ –

महात्मा गांधी ने शिक्षा की परिभाषा इस प्रकार से बताई है कि ''शिक्षा से मेरा अभिप्राय बालक या मनुष्य के शरीर, मस्तिष्क या आत्मा के सर्वांगीण एवं सर्वोत्तम विकास से है।"

अरस्तु ने शिक्षा को परिभाषित इस प्रकार किया है कि , "स्वस्थ शरीर में स्वस्थ मस्तिष्क का निर्माण करना ही शिक्षा है।" ।

स्वामी विवेकानन्द के अनुसार यदि हम शिक्षा की परिभाषा को जाने तो "शिक्षा का प्रथम उद्देश्य व्यक्ति की आन्तरिक पूर्णता को बाह्य जगत् में प्रकट करना ही शिक्षा का उद्देश्य है जिससे कि वह स्वयं को अच्छी तरह जान सके।"

डॉक्टर थॉमस ने लिखते है कि " शिक्षा भारत में विदेशी नहीं है, ऐसा कोई भी देश नहीं है जहां ज्ञान के प्रति प्रेम इतने आदि काल से हुआ हो या जिसने इतना स्थाई और सशक्त प्रभाव को उत्पन्न किया हो। वैदिक युग के साधारण कवियों से लेकर आधुनिक युग के बंगाली दार्शनिक तक शिक्षकों एवं विद्वानों की एक अविरल परंपरा रही है।"

रूसो के मत में "शिक्षा का उद्देश्य मानव को प्रकृति के अनुरूप जीवन जीने के योग्य बनाना है। शिक्षा द्वारा मानव संसर्ग के परिणामस्वरूप जो कृत्रिमता उसमें आती है, उससे उसकी रक्षा करता है ।"

भारतीय ज्ञान परम्परा में शिक्षा को विद्या के रूप में भी माना जाता है विद्या का महत्व हमारे शास्त्रों में विशद् रूप से वर्णित है यथा–

विद्यां ददाति विनयं विनयाद् याति पात्रताम्।
पात्रत्वात् धनमाप्नोति धनात् धर्मं ततः सुखम्।।

अर्थाद् ज्ञान विनम्रता प्रदान करता है, विनम्रता से योग्यता आती है और योग्यता से धन प्राप्त होता है, जिससे व्यक्ति धर्म के कार्य करता है और सुखी रहता है। इसी प्रकार –

विद्या नाम नरस्य रूपमधिकं प्रच्छन्नगुप्तं धनम्
विद्या भोगकरी यशः सुखकरी विद्या गुरूणां गुरुः ।
विद्या बन्धुजनो विदेशगमने विद्या परं दैवतम्
विद्या राजसु पूज्यते न हि धनं विद्याविहीनः पशुः ।।

मनुष्य इन्सान का विशिष्ट रुप है, गुप्त धन है । वह भोग देनेवाली, यशदात्री, और सुखकारक है। विद्या गुरुओं की गुरु है, विदेश में वह बंधु है। विद्या देवता है राजाओं में विद्या की पूजा होती है, धन की नहीं। विद्याविहीन मनुष्य पशु है । इसलिए व्यक्ति को मानव जीवन में विद्या एवं शिक्षा दोनों की अत्यंत आवश्यकता होती है।

1.3.3 शिक्षा एवं ज्योतिष का अन्तः संबंध

शिक्षा का प्रमुख्य उद्देश्य किसी भी शास्त्र के सम्यक् अध्ययन में सहायता प्रदान करना है। शिक्षा अधिगम प्रक्रिया को सरल बनाकर अध्यापक एवं छात्र के कौशल वृद्धि में सहायता प्रदान करता है। भारतीय ज्योतिष शास्त्र का अध्ययन एवं अध्यापन अन्य लौकिक शास्त्रों से कुछ भिन्न है। ज्योतिष के मानक ग्रन्थों में शिक्षा में प्रयुक्त होने वाली विधियां एवं प्रविधियां लाक्षणिक रूप में वर्णित है। इसमें कोई सन्देह नहीं कि ज्योतिष शास्त्र में शिक्षा स्वयं ही सन्निहित है। आधुनिक शिक्षाशास्त्री अध्यापन में जिन प्रविधियों का प्रयोग नवीन स्वरूप में करते हैं, यदि सूक्ष्म दृष्टि से देखा जाय तो स्पष्ट ही परिलक्षित होता है कि उन प्रविधियों का मूल भारतीय शास्त्रों में ही छिपा हुआ है। हमारी भारतीय परम्परा में वेदरूपी पुरूष के षडअंगो मैं से शिक्षा को वेद रूपी पुरुष की नासिका माना गया है। वेद रूपी पुरुष के नयन के रूप में ज्योतिष शास्त्र सुप्रतिष्ठित है।

ज्योतिष शास्त्र के मूर्धन्य आचायों का शिक्षण प्रविधि के प्रतिपादन में महत्वपूर्ण अवदान है। यद्यपि परम्परागत भारतीय शिक्षण पद्धति के अनुसार उनकी शिक्षा पद्धति भी मुख्यरूप से व्याख्यान शैली पर ही आश्रित थी, परन्तु उनके ग्रन्थों का सूक्ष्म अध्ययन करने से कुछ नूतन विचार भी अवश्य ही प्राप्त होते हैं। जिसमें विषयवस्तु की स्पष्टता होना, उद्देश्य कथन, अव्यावहारिक, विवादित एवं व्यर्थ बातों को पाठ्यक्रम में स्थान न देना, आदर्श शिक्षक के गुण, शिष्य परीक्षण, विषय शिक्षण में भाषा प्रयोग आदि महत्वपूर्ण हैं। इस प्रकार निःसन्देह ज्योतिष एवं शिक्षा परस्पर घनिष्ठ सम्बन्ध रखते हैं। यदि ज्योतिष शास्त्र में निर्देशित शिक्षा का प्रयोग आधुनिक शैक्षणिक संस्थानादि में किया जाय तो निश्चित रूप से सकारात्मक परिणाम प्राप्त हो सकते हैं

1.4 शिक्षा के क्षेत्र में ज्योतिष की भूमिका

इस युग में शिक्षा का क्षेत्र अत्यन्त विस्तृत हो गया हैं और बदलते हुए जीवन–मूल्यों के साथ–साथ शिक्षा के उद्धेश्य भी बदल गये हैं। शिक्षा व्यवसाय से जुड़ गई हैं और छात्र–छात्राएं व्यवसाय की तैयारी के रूप में ही इसे ग्रहण करते है। उनके लिए व्यावसायिक भविष्य को उज्ज्वल बनाने की दृष्टि से विषय का चयन करना अत्यन्त समस्यापूर्ण हो गया हैं। इसके अलावा शिक्षण संस्थाओं में प्रवेश अथवा अच्छा व्यवसाय प्राप्त करने के लिए उन्हें अनेक कठिनाइयों का सामना करना पड़ता हैं। अतः इस संदर्भ में अन्य तथ्यों को ध्यान में रखने के साथ–साथ असफलता एवं समय पर

ज्योतिष सिद्धान्तों के आधार पर लिया गया निष्कर्ष ही विषय एवं व्यवसाय के चयन में उपयोगी या लाभकारी सिद्ध हो सकता हैं।

प्राचीन काल से ही शिक्षा का प्रमुख्य उद्धेश्य ज्ञानार्जन रहा है। विद्यार्थी किसी योग्य विद्वान के मार्गदर्शन में कई प्रकार की शिक्षा ग्रहण किया करते थे । इसके साथ साथ उन्हें शस्त्र संचालन का ज्ञान एवं विभिन्न कलाओं का ज्ञान प्रदान किया जाता था । किन्तु आज के समय में यह सभी प्रशिक्षण लगभग गौण हो गये । शिक्षा की महत्ता बढ़ने व प्रतिस्पर्धात्मक युग में सजग रहते हुए बालक के बोलने व समझने लगते ही माता–पिता शिक्षा के बारे में चिंतित हो जाते हैं । कुछ वर्षो बाद सबसे बड़ी समस्या यही होती हैं कि कौन सा विषय पढ़ें जिससे भविष्य सुखमय हो।

भविष्य (करियर) निर्माण हेतु– हमारी सनातन परंपरा में बालक को उसकी रुचि के अनुसार अपना कार्यक्षेत्र चुनने की प्राथमिकता पर बल दिया जाता है । षोडश संस्कारों के क्रम में पांचवे संस्कार अर्थात् भूमि उपवेशन संस्कार के समय बालक को भूमि पर बैठा कर उसके आगे वस्त्र,शस्त्र,पुस्तक, लेखनी, सोना,चांदी आदि अनेक वस्तु रख दी जाती है उन वस्तुओं में से जिस वस्तु को बालक अपनी इच्छा से पहले उठा लेता है उसी वस्तु के द्वारा उस बालक की जीविका का निर्धारण किया जाता है अर्थात् उसी क्षेत्र में उसकी रुचि होगी ऐसा माना जाता है। हम सभी जानते हैं व्यक्ति की रुचि के अनुसार यदि व्यवसाय किया जाये तो वह निश्चित ही सफल होगा।

तस्मिन् काले स्थापयेत्तत्पुरस्ताद्वस्त्रं शस्त्रं पुस्तकं लेखनी च।
स्वर्ण रौप्यं यच्च गृह्णाति बालस्तैराजोवैस्तस्य वृत्तिः प्रदिष्टा ।।

(मुहूर्तचिंतामणि संस्कार प्रकरण श्लोक 22)

- ❖ सर्वप्रथम जातक के आरंभिक काल से ही उसकी जन्मकुण्डली के द्वारा किस विषय में वह पढाई करे तो उसके लिए उचित रहेगा या किस क्षेत्र विशेष में कार्य करे तो वह सफलता प्राप्त करेगा, इस सन्दर्भ में ज्योतिष अत्यंत सहायक होता है।
- ❖ मानव की जन्मकुण्डली एवं उसकी रुचि के सामंजस्य से यह निर्धारित करना चाहिए कि वह व्यवसाय करेगा अथवा नौकरी ।
- ❖ हम सभी जानते हैं कि प्रायः मनुष्य अपनी युवा अवस्था में व्यवसाय का चयन करता है अतः युवा अवस्था में उसकी दशा अंतर्दशा का सूक्ष्म परीक्षण करना चाहिए जिससे वह अपना व्यवसाय उचित क्षेत्र में बना सके।
- ❖ ज्योतिष शास्त्र में गोचर (ग्रह स्थिति) का भी अत्यंत महत्वपूर्ण स्थान है गोचर का अर्थ है वर्तमान कालिक ग्रह स्थिति। अतः इसका भी अवलोकन करना चाहिए जिससे कि भविष्य एवं शिक्षा चयन करने में सहायता प्राप्त हो सके ।
- ❖ ज्योतिष शास्त्र एक मनोवैज्ञानिक शास्त्र है अतः ज्योतिषी को एक मनोवैज्ञानिक भी होना चाहिए ऐसा कहा जाता है, इसके अनुसार हम जातक की रुचि आदि को और ग्रह स्थिति को देखकर शिक्षा चयन में सहायता प्रदान कर सकते हैं ।
- ❖ हम सभी जानते हैं कि समय समय पर बालक बालिकाओं के शारीरिक एवं मानसिक परिवर्तन होते रहते हैं जिससे उनकी रुचि कार्यशैली आदि में भी परिवर्तन आता है इसका सूक्ष्म अध्ययन हम ज्योतिष शास्त्र के माध्यम से कर सकते हैं ।
- ❖ जातक को किस काल विशेष में शिक्षा प्रदान की जाये इसका ज्ञान भी ज्योतिष शास्त्र के माध्यम से किया जा सकता है ।

- ❖ जातक के शिक्षा ग्रहण करने की अवधि में जो समस्याएँ उत्पन्न होती है यदि ज्योतिष शास्त्र के द्वारा उनका पूर्व ज्ञान कर लिया जाये तो निश्चित तौर पर जातक की शिक्षा में बाधा कूछ न्यून अवश्य हो सकती है।
- ❖ शिक्षाचयन में अधिक विकल्प होने पर ज्योतिष द्वारा काउन्सलिंग की जा सकती है।
- ❖ वास्तुशास्त्र ज्योतिष शास्त्र का ही एक अंग माना जाता है। विद्यालय भवन यदि वास्तुसम्मत बनाये जायें तो अध्यापक एवं छात्र दोनों का ही सम्प्रेषण व अधिगम अधिक प्रभावशाली हो सकता है।
- ❖ वास्तुसम्मत अध्ययन कक्ष में अध्ययन करते समय यदि पूर्व या उत्तर मुख हो तो सकारात्मकता में वृद्धि की जा सकती है।
- ❖ ज्योतिष शास्त्र मात्र फलादेश पद्धति को ही प्रतिपादित नहीं करता अपितु इसमें भूगोलविज्ञान, खगोलविज्ञान, गणितशास्त्र, सृष्टिविज्ञान, भूगर्भविज्ञान, शिल्प, आलेखन कला आदि अनेक विषय मूलरूप में विद्यमान हैं। यह शास्त्र अनेक प्राचीन विज्ञान एवं कलाओं का अद्भुत सम्मिश्रण है। जिनका उपयोग छात्रों को अपने गौरवशाली इतिहास से परिचित कराने के साथ ही इन विज्ञान एवं कलाओं को आगे बढ़ाने में भी किया जा सकता है।
- ❖ इस शास्त्र के संहिता खण्ड में अश्व, गज, छाग आदि के लक्षण कहे गये हैं। जो पशुविज्ञान की दृष्टि से महत्वपूर्ण हैं। जिनकी जानकारी इस क्षेत्र के विद्यार्थियों के लिए लाभप्रद होगी।
- ❖ साथ ही साथ पर्यावरण विषयक ज्ञान भी संहिता स्कन्ध में पर्याप्त विद्यमान है जिससे पर्यावरण शिक्षा के प्रति भी जागरूकता आती है ।

शिक्षा हेतु विभिन्न ज्योतिष शास्त्रीय स्थितियाँ एवं योग –जन्म कुण्डली का नवम भाव धर्म त्रिकोण स्थान हैं जिसके स्वामी देव गुरू बृहस्पति हैं यह नवम भाव शिक्षा में महत्वाकांक्षा व जातक की उच्च शिक्षा तथा उच्च शिक्षा में भी स्तर विशेष को दर्शाता हैं और यदि इसका सम्बन्ध पंचम भाव से हो जाए तो जातक अच्छी शिक्षा ग्रहण करता हैं ।

शिक्षा का स्तर –जन्म कुण्डली का पंचम भाव बुद्धि, ज्ञान, कल्पना, रचनात्मक कार्य, स्मरणशक्ति व पूर्व जन्म के संचित कर्म को दर्शाता हैं । यह शिक्षा के संकाय का स्तर तय करता हैं।

अच्छी शैक्षणिक योग्यता के महत्वपूर्ण योगः–

1. द्वितीय भाव का अधिपति या बृहस्पति यदि केन्द्र या त्रिकोण में स्थित हो तो जातक अच्छी शिक्षा प्राप्त करता है ।
2. पंचम भाव(विद्या भाव) में यदि बुध विराजमान हो अथवा उसकी दृष्टि या गुरु और शुक्र की एक साथ युति होने पर भी जातक अच्छी शिक्षा ग्रहण करता है।
3. पंचम भाव के स्वामी की पंचम भाव में गुरु या शुक्र के साथ युति यदि हो तो ऐसी परिस्थिति में भी जातक अच्छी शिक्षा प्राप्त करता है।
4. यदि जातक की जन्मकुंडली में गुरु , शुक्र और बुध में से कोई भी ग्रह केन्द्र (1,4,7,10) या त्रिकोण (5,9) में हो तब भी जातक अच्छी शिक्षा ग्रहण करता है।

शैक्षणिक योग्यता का अभाव या न्यूनता –

1. यदि जातक की जन्मकुंडली में पंचम भाव में शनि की स्थिति हो और शनि की लग्नाधिपति परदृष्टि हो तो ऐसी स्थिति में शैक्षणिक योग्यता का अभाव या न्यूनता रहती है।
2. यदि जातक की जन्मकुंडली के पंचम भाव पर अशुभ ग्रहों की दृष्टि या पंचम भाव में अशुभ ग्रहों के रहने पर भी जातक को न्यून शिक्षा प्राप्त होती है।
3. पंचम भाव का अधिपति(स्वामी) नीच राशि में विराजमान हो और अशुभ ग्रहों से दृष्ट हो तो भी जातक अल्प शिक्षा ग्रहण करने वाला होता है।

ग्रहों के शिक्षा संबंधी क्षेत्र –

सूर्य –नेत्र–चिकित्सा, शरीर विज्ञान, प्राणीशास्त्र,, राजभाषा, प्रशासन, चिकित्सा, राजनीति, जीव विज्ञान।

चन्द्र–काव्य,नाविक शिक्षा, वनस्पति विज्ञान, जंतु विज्ञान (जूलोजी), होटल प्रबन्धन, पत्रकारिता, पर्यटन, नर्सिंग, डेयरी विज्ञान।

मंगल– शल्य चिकित्सा, सैन्य–क्षेत्र, कानून, इतिहास, पुलिस सम्बन्धी प्रशिक्षण, सर्वे अभियांत्रिकी, वायुयान शिक्षा, विज्ञान,या अन्य तकनीकी शिक्षा, खेल कूद सम्बन्धी प्रशिक्षण , सैनिक शिक्षा, दंत चिकित्सा ।

बुध– ज्योतिष,गणित, व्याकरण, शासन की विभागीय परीक्षाएं, पर्दाथ विज्ञान, मनोविज्ञान, हस्तरेखा ज्ञान, शब्दशास्त्र (भाषा विज्ञान), टाइपिंग, तत्व ज्ञान, पुस्तकालय विज्ञान, लेखा, वाणिज्य, शिक्षक प्रशिक्षण।

गुरू–मनोविज्ञान, धार्मिक या आध्यात्मिक शिक्षा, बीजगणित, द्वितीय भाषा, आरोग्यशास्त्र, विविध, अर्थशास्त्र, दर्शन, ।

शुक्र– वेशभूषा,ललितकला (संगीत, नृत्य, अभिनय, चित्रकला आदि), फिल्म, टी0वी0, फैशन डिजायनिंग, काव्य साहित्य एवं अन्य विविध कलाएं।

शनि– औद्योगिकी,भूगर्भशास्त्र, सर्वेक्षण, अभियांत्रिकी, यांत्रिकी, भवन निर्माण, मुद्रण कला (प्रिन्टिंग)।

राहु– तर्कशास्त्र,एन्टी बायोटिक्स, इलेक्ट्रोनिक्स।

केतु– मंत्र–तंत्र सम्बन्धी ज्ञान, गुप्त विद्याएं।

1.4.1 ज्योतिष का शैक्षणिक महत्व एवं उपयोग

शिक्षा के क्षेत्र में ज्योतिष शिक्षा का समुचित प्रबन्धन ज्ञानप्राप्ति को सरल, सुगम एवं बोधगम्य बना देता हैं। ज्योतिष शास्त्र के मानक ग्रन्थों में यद्यपि शैक्षिक प्रबन्धन के जो मूल उद्देश्य बताए गए हैं उनको लेकर कोई विशेष चर्चा नहीं की गई है, किन्तु इनमें कहीं प्रकीर्ण तत्व अवश्य ही ज्योतिष शास्त्र में शैक्षिक प्रबन्धन को बताते हैं। ज्योतिष शास्त्र मानव जीवन को सुव्यवस्थित ढंग से जीने की कला को विकसित करने में अत्यन्त सहायक शास्त्र है। अतः यह शास्त्र जीवन को व्यवस्थित तथा सुचारू रूप से जीने के लिए कालगणना के साथ –साथ प्राणिमात्र के जीवन में घटित होने वाली शुभाशुभ घटनाओं का पूर्वानुमान कर अशुभत्व के निराकरण करने का प्रयास करता है। जीवन के विविध आयामों यथा शैक्षिक, सामाजिक, धार्मिक, आजीविका आदि का प्रबन्धन सुनियोजित प्रकार से हो, अतः इनके पूर्वानुमान करने हेतु सिद्धान्त की

आधारभूमि पर यह शास्त्र ग्रहों की गति–स्थित्यादि को ज्ञात कर तदनुसार फलादेश करता है। अपने पूर्वानुमान के प्रयोजन को सिद्ध करने हेतु यह शास्त्र होरा एवं संहिता के रूप में व्यक्ति के व्यष्टिगत एवं समष्टिगत फल को निरूपित करता है। ज्योतिषशास्त्र का फलादेश कथन निश्चितरूप से शैक्षणिक गतिविधियों में सहायक सिद्ध हो सकता है। सर्वप्रथम कुण्डली के अनुसार बालक की रुचि, मेधाशक्ति, उसकी आजीविका की दिशा इत्यादि पर विचार कर उसे तदनुरूप शिक्षा प्रदान की जाय, तो निश्चित रूप से वह आत्मविश्वास से परिपूर्ण होकर सम्यक् प्रकार से कार्यनिष्पादन कर पायेगा। अतः बालक की रुचि इत्यादि के अनुसार उसे रुचि अनुकूल वातावरण उपलब्ध करा कर उसे सही दिशा दे सकते हैं। उसे तकनीकी ज्ञान प्राप्त करना है या चिकित्सकीय ज्ञान अथवा शोध करना है? इत्यादि विषयों को जानने में ज्योतिष शास्त्र अत्यन्त सहायक है। इस शास्त्र के ज्ञान से मनुष्य भावी सुख– दुःखादि का ज्ञान कर अपने पौरुष से उसे अनकूल बना सकता है। यह शास्त्र मनोवैज्ञानिक रूप से उसे दुःखादि अशुभ परिस्थितियों को झेलने में सम्बल प्रदान करता है। इस प्रकार प्राणीमात्र पर पड़ने वाले शुभाशुभ प्रभाव का अध्ययन कर फलकथन करना एवं मानव जीवन से सम्बन्धित विभिन्न पहलुओं का अध्ययन कर उसे समुचित मार्गदर्शन देना ही ज्योतिष शास्त्र का मुख्य उद्देश्य है। जातक की अभिरुचि, दक्षता, स्वभावादि का विश्लेषण करके उसे भावी जीवन में अपने कार्यक्षेत्र का चुनाव करने में सहायक सिद्ध हो सकता है। अतः इस शास्त्र की लोकोपयोगिता को द्योतित करते हुए आचार्य कल्याणवर्मा का कथन है–

अर्थार्जने सहाय पुरुषाणामापदणवे पोतः ।
यात्रासमये मन्त्री जातकमपहाय नास्त्यपरः ।।

(सारावली होराशब्दनिरूपणाध्याय 5)

यह शास्त्र धनार्जन में सहायक, आपत्तिरूपी समुद्र में नाव के समान, यात्रा के समय मन्त्री के समान है। अतः जातक शास्त्र के समान कोई दूसरा शास्त्र सहायक नही है। इस शास्त्र के संहिता खण्ड में सिद्धान्त एवं होरा गत विषयों के अतिरिक्त अन्य समस्त विषयों का समावेष हो जाता है। इस कारण ज्योतिष शास्त्र का संहिता खण्ड सर्वाधिक महत्वपूर्ण है। संहिता को परिभाषित करते हुए आचार्य वराहमिहिर का निम्नलिखित कथन इसके बृहत्कायत्व को प्रमाणित करता है –**तत्कार्त्स्न्योपनयस्य नाम मुनिभिः संकीर्त्यते संहिता**।। इस प्रकार संहिता खण्ड के बृहत् कलेवर में आधुनिक भूगोलशास्त्र, भूगर्भविज्ञान, आन्तरिक्षविज्ञान, स्वरशास्त्र, शकुनशास्त्र, वास्तुकला, शिल्पकला, आलेखन, हस्तरेखाविज्ञान, भौतिकविज्ञान, रसायनविज्ञान, मनोविज्ञान इत्यादि का समावेष हो जाता है। जिसमें जीवन के विविध आयामों के प्रबन्धन के तत्व स्पष्टतः परिलक्षित हो जाते हैं। ज्योतिष शास्त्र में प्राचीन शिक्षण विधियां प्रायः देखी जाती हैं। यथा विधि, पारायण विधि, कण्ठस्थीकरणविधि, सूत्रविधि, प्रश्नोत्तरविधि, शास्त्रार्थविधि, कथाकथनविधि, वादविवादविधि, चर्चाविधि, मौखिकज्ञानविधि, पर्यटन विधि, वेधशाला द्वारा परीक्षण विधि इत्यादि। इसके अलावा भी आधुनिक शिक्षाशास्त्रियों द्वारा कही गयी ह्यूरिस्टिक, प्रत्यक्ष, प्रायोजना, समस्या, आगमन–निगमन, विश्लेषण–संश्लेषण, निरीक्षण, क्रीडा द्वारा ज्ञान प्राप्त करना जैसी विधियां भी ज्योतिष शास्त्र के मानक ग्रन्थों में सूक्ष्म रूप से प्राप्त हो जाती हैं। वस्तुतः आधुनिक शिक्षा शास्त्रियों द्वारा प्रतिपादित विधियां विद्यालय स्तर पर छात्रों के अधिगम हेतु अध्यापकों को सम्प्रेषण कला से युक्त करने के लिए है।

ज्योतिष में शैक्षणिक तत्व– शिक्षा का समुचित प्रबन्धन ज्ञानप्राप्ति को सरल, सुगम एवं सुबोधगम्य बना देता हैं। ज्योतिष शास्त्र के मानक ग्रन्थों में यद्यपि शैक्षिक प्रबन्धन के मूल उद्देश्यों को लेकर कोई चर्चा नहीं की गई है, किन्तु इनमें यत्र तत्र प्रकीर्ण तत्व

अवश्य ही ज्योतिष शास्त्र में शैक्षिक प्रबन्धन को परिलक्षित करते हैं। प्रस्तुत लेख में शैक्षिक प्रबन्धन के कुछ मूलतत्वों पर ज्योतिषशास्त्र की दृष्टि से विचार करने का प्रयास किया जा रहा है।

1. **समय परिपालन**– शिक्षा क्षेत्र में समय परिपालन का बहुत अधिक महत्व है । समय के अनुपालन के बिना शिक्षाप्राप्ति में बाधाएं आ जाती है। ज्योतिष शास्त्र तो कालगणना का शास्त्र है। जीवन में घटित होने वाली घटनाओं का सही आकलन तभी सम्भव है जब समय के सूक्ष्मावयवों की सही गणना हो सकेगी। वेदोक्त यज्ञ यागादि को करने के लिए भी समुचित समय की आवश्यकता होती है। आचार्य भास्कर के अनुसार

वेदास्तावद्यज्ञकर्मप्रवृत्ताः यज्ञाः प्रोक्तास्ते तु कालाश्रयेण ।।

(सि.शि.गणि.म.काल.श्लो.9)

यदि समय का अनुपालन न करते हुए वेदोक्त यज्ञादि का अनुष्ठान गलत समय पर किया जाय तो वह गर्हित एवं अशुभ फल देने वाला होता है। अतः हमारे शास्त्रों में संस्कारों, व्रत,पर्व, उत्सव एवं अन्य क्रियाकलापों में समय का अनुपालन आवश्यक है। इसलिए ज्योतिषशास्त्र में मुहूर्तशोधन एक महत्वपूर्ण कार्य है। अतः स्पष्ट है कि कालगणना करने वाला ज्योतिषशास्त्र समय के अनुपालन को अत्यन्त महत्वपूर्ण मानता है। जो शैक्षिक प्रबन्धन हेतु अत्यन्त आवश्यक है।

2 **अनुशासन** –जिस प्रकार हमारे जीवन में अनुशासन का विशेष महत्व है उसी प्रकार शैक्षिक प्रबन्धन में भी अनुशासन एक महत्वपूर्ण सोपान है। अर्थात् छात्रों में अनुशासन स्थापित करना शैक्षिक प्रबंधन का एक महत्वपूर्ण विचारणीय विषय है। हमारा ज्योतिषशास्त्र विद्यार्थियों में आत्म अनुशासन का समर्थक रहा है। आत्म (स्वतः) अनुशासन स्थापित करने हेतु रचनात्मक कार्यों में छात्रों को संलग्न करते हुए उन्हें व्यस्तरखना आवश्यक है। अध्यापन करते समय यदि अध्यापक अपनी भाषा के माध्यम से विषय को सरल व सुबोधगम्य तरीके से प्रस्तुत करता है तो अवश्य ही छात्र स्वतः अनुशासित (आत्म) रहते हैं। इस प्रकार हम कह सकते हैं कि छात्रों में अनुशासन स्थापित करने में अध्यापक की महत्वपूर्ण भूमिका रहती है। शिक्षण के समय भाषा किस प्रकार की हो? इस विषय का दिग्दर्शन आचार्य भास्कर के निम्न वचन से मिल जाता है–

.......चतुरप्रीतिप्रदां प्रस्फुटां संक्षिप्ताक्षरकोमलामलपदैर्लालित्यलीलावतीम् ।

(लीलावती मंगलाचरण श्लोक 01)

कोमलबुद्धि के छात्रों के लिए आनन्द देने वाली चातुर्यपूर्ण वाणी में संक्षिप्त अक्षरों से युक्त अर्थात् व्यर्थ वाक् जाल न फैलाकर छात्रों को आसानी से समझ में आने वाले सरल शब्दावली का प्रयोग, कोमल अर्थात् कर्णप्रिय मृदुध्वनियुक्त, अमलपद अर्थात् शुद्ध व स्पष्ट समझ में आने वाली शब्दावली का प्रयोग, लालित्यमय अर्थात् माधुर्यगुणयुक्त ऐसी वाणी जिसमें छात्र आत्मीयता का अनुभव कर सकें तथा लीलायुक्त अर्थात् हास परिहास व खेल खेल में अध्ययन हो जाय, ऐसी भाषा का प्रयोग होना चाहिए।सम्भवतः इसी कारण हमारे शास्त्रों के मानक ग्रन्थ प्रायः छन्दोबद्ध रचे गये हैं। इसी प्रकार पढाते समय सुन्दर बोधप्रश्नादि का भी समावेश होना चाहिए। जिससे छात्र द्वारा अधीत ज्ञान का पुनः स्मरण एवं अध्यापक को छात्रों के ज्ञानग्रहण की क्षमता का भी परीक्षण होता रहता है। अतः भास्कराचार्य का निम्न वचन भी प्रेरणास्पद है।

लीलागम्यः सुललितपदः प्रश्नरम्यः स यस्मात्.... ।।

(सि.शि. गोलाध्याय गोलप्रशंसा श्लो. 4)

संक्षिप्तवर्णन अवश्य करना चाहिए। इसका दिग्दर्शन ज्योतिष ग्रन्थों में स्पष्ट मिल जाता है।यथा सूर्यसिद्धान्त में ज्यौतिषोपनिषदध्याय एवं मानाध्याय वर्णित है।

3. **पाठ्यक्रम**– शैक्षिक प्रबन्धन का महत्वपूर्ण कार्य पाठ्यकम बनाना तथा उसका सही प्रकार से कियान्वयन करना भी है। सर्वप्रथम पाठ्यक्रम किस प्रकार होना चाहिए? इस सन्दर्भ में **आचार्य भास्कर** का निम्न कथन प्रेरणास्पद है .

.....नो संक्षिप्तं न च बहुवृथा विस्तरः शास्त्रतत्त्वम्।
लीलागम्यः सुललितपदः प्रश्नरम्यः स यस्मात्..... ।।

उपर्युक्त वचनानुसार पाठ्यकम न तो बहुत संक्षिप्त हो, न अधिक विस्तृत ही हो ।उसमें शास्त्रों का तत्त्व अर्थात् प्रामाणिक ज्ञान हो। पाठ्यक्रम इस प्रकार का होना चाहिए कि वह छात्रों के लिए शीघ्रबोधगम्य हो, एवं क्लिष्ट न हो। पाठ्यक्रम में निर्धारित पुस्तकों में प्रयुक्त शब्दावली सुन्दर एवं पढने में ललित हों। साथ ही सुन्दर बोध–अभ्यासादि प्रश्नों से युक्त हो।

4 **कक्षोपकरण**– शिक्षा में कक्ष संबंधी उपकरणों का विशेष महत्व होता है क्योंकि शिक्षा की व्यवस्था वर्तमान समय में अधिकांशतः कक्षों में रहती है। इसीलिय शैक्षिक प्रबन्धन में कक्ष व्यवस्था तथा उसके लिए उपकरण आदि की सुनियोजित व्यवस्था का भी महत्वपूर्ण स्थान होता है। आज भौतिकसंसाधनों की आवश्यकता अधिक अनुभव की जाती है। हमारी प्राचीन शिक्षा प्रणाली में आवश्यकतानुरूप कहीं पर भी अध्ययन अध्यापन होता था। ज्योतिषशास्त्र में कक्षोपकरण के रूप में विविध यन्त्रों के निर्माण एवं प्रयोगविधि मिलती है। सिद्धान्त ग्रन्थों में प्रायः यन्त्राध्याय का वर्णन इसी दृष्टिकोण से किया जाता रहा है। परन्तु होरा एवं संहिता गत विषयों को समझने के लिए प्रकृति ही कक्षोपकरण के रूप में दिखाई देती है। नवीन शिक्षा प्रणाली के प्रभावानुसार आज परम्परागत शास्त्र शिक्षण में भी कक्षोपकरणों का विशेष महत्व दिखाई देता है। साथ ही साथ आजकल तो आनलाईन अध्ययन अध्यापन का भी प्रचालन बहुत ज्यादा हो गया है जिसके लिए कई उपकरणों की आवश्यकता होती है जिससे शिक्षण रुचिकर एवं सरल होता जा रहा है। आज हम देखते हैं कि ज्योतिष शिक्षण के भी कई प्लेटफार्म हमें आनलाईन प्राप्त होते हैं। जिससे ज्योतिष का अध्ययन अध्यापन भी सरल हो गया है । वस्तुत शिक्षा के क्षेत्र में कक्ष से संबंधित उपकरण या प्रयोगशाला आदि का प्रयोग ज्योतिष शास्त्र में अत्यंत प्राचीन काल से ही हमें दिखाई देता है।

5. **शिक्षण पद्धति**– शैक्षिक प्रबन्धन का एक प्रमुख आयाम शिक्षण पद्धति भी है। पाठ्यक्रम को किस पद्धति के अनुसार पढाया जाय ? यह आज एक बड़ी समस्या दिखाई देती है। ज्योतिष शास्त्र के मानकग्रन्थों में वर्णित विषयों के अध्ययन से ज्ञात होता है कि प्रायः प्रश्नोत्तर पद्धति वहाँ मान्य है, जिसमें प्रश्नों के उत्तर के रूप में व्याख्यान पद्धति का भी आश्रय लिया जाता है परन्तु परम्परागत इस शिक्षण पद्धति के अतिरिक्त भी आगमन–निगमन विधि, ह्यूरिस्टिक विधि, विश्लेषण–संश्लेषण विधि, प्रायोजना विधि आदि आधुनिक विधियों का भी समावेश ज्योतिष शास्त्र के मानक ग्रन्थों में दृष्टिगोचर हो जाता है।

वस्तुतः ज्ञात ज्ञान से अज्ञात ज्ञान को जानना, सूत्र से उदाहरण को समझना, प्रयोगशाला में उपकरणों का प्रयोग, यन्त्रों के प्रयोग से प्रायोगिक ज्ञान करना

आदि बातें ज्योतिष शिक्षण में प्राचीन काल से ही दिखाई देती रही है। प्राचीन काल से ही ज्योतिष शिक्षण पद्धति की विशेषता ही यह रही है कि उपलब्ध ज्ञान की प्रामाणिकता को प्रत्यक्ष रूप से परीक्षण कर पुष्ट किया जाय। मतभिन्नता होने पर उसे सकारण प्रस्तुत करना, ज्योतिष के व्याख्याता ऋषि महर्षियों व आचार्यो की सुदृढ परम्परा रही है। शास्त्रार्थ पद्धति के उद्भव का कारण भी यही है। इसी कारण अनेक ग्रन्थों का प्रणयन हो सका। अतः आज के परिप्रेक्ष्य में भी शिक्षण पद्धति किसी एक विधि पर आश्रित न होकर अनेक विधियों से युक्त होनी चाहिए। छात्रों को स्वयं सोचने व करने के लिए भी प्रेरित किया जाना चाहिए। उनकी स्मृतिशक्ति के विकास के लिए जहाँ उनको याद करने (पाठ की आवृत्ति करने) की क्षमता में अभिवृद्धि आवश्यक है, वहीं दूसरी ओर उनको याद किये गये पाठों को स्वयं समझने हेतु प्रेरित किया जाना चाहिए।

5. **परीक्षा प्रणाली**–छात्रों के समुचित मूल्यांकन हेतु परीक्षा प्रणाली किस प्रकार की हो ? जिससे छात्र का उचित मूल्यांकन हो सके इसके लिए प्राचीन शिक्षा प्रणाली में बार– बार शिष्य की परीक्षा लेने के निर्देश मिलते हैं। आज हम देखते हैं कि परीक्षा प्रणाली में प्रायः सीमित व निर्धारित, समय एवं पाठ्यकम के अनुसार ही प्रश्न पूछे जाते हैं परन्तु हमारी प्राचीन शिक्षा प्रणाली में अधीत ज्ञान के आधार पर प्रायोगिक तथा तत्सम्बन्धी अन्य विषयों की आवश्यकतानुसार परीक्षा ली जाती थी। इसी कारण ज्योतिषशास्त्र के प्राचीन प्रमुख (मानक) ग्रन्थों में भी शिष्यों के सुपरीक्षित होने पर ही विशेष ज्ञान प्रदान करने की बात कही गई है। जैसे कि सूर्यसिद्धान्त में कहा गया है –

रहस्यमेतद्देवानां न देयं यस्य कस्यचित् ।
सुपरीक्षितशिष्याय देयं वत्सरवासिने।

6 **कर्तव्यनिष्ठ एवं योग्य व्यक्तियों का चयन**– शिक्षा क्षेत्र में समुचित प्रबंधन हेतु कर्तव्यनिष्ठ व योग्यव्यक्तियों का चयन आवश्यक है। सूर्यसिद्धान्त के अनुसार मय ने ज्योतिष के परम रहस्य को जानने के लिए भगवान सूर्य की आराधना की

अल्पावशिष्टे तु कृते मयो नाम महासुरः ।
रहस्यं परमं पुण्यं जिज्ञासुर्ज्ञानमुत्तमम् ।।
वेदांगमग्रयमखिलं ज्योतिषां गतिकारणम् ।
आराधयन् विवस्वन्तं तपस्तेपे सुदुश्चरम् ।।

(सूर्यसिद्धान्त मध्यमाधिकार श्लोक 02–03)

बृहत्संहिता के सांवत्सरसूत्राध्याय में आचार्य वराहमिहिर सुयोग्य सांवत्सरिक (ज्योतिषज्ञ) के लक्षणों का विस्तारपूर्वक वर्णन करते हुए कहते हैं कि –

तस्माद्राज्ञाधिगन्तव्यो विद्वान् सांवत्सरोऽग्रणीः।
जयं यशः श्रियं भोगान् श्रेयश्च समभीप्सता।।

अर्थात् जय, यश, लक्ष्मी, भोग एवं श्रेय की इच्छा रखने वाले राजा को विद्वान् व श्रेष्ठ ज्योतिषी के पास जाना चाहिए। इस प्रकार ज्योतिष शास्त्र योग्य एवं कर्तव्यनिष्ठ व्यक्तियों के चयन हेतु हमारा मार्गदर्शन करता है।**(भारतीय ज्योतिष का इतिहास एवं परिचय भाग 02 ,उत्तराखंड मुक्त विश्वविद्यालय, हल्द्वानी)**

इस प्रकार यदि हम विचार करें तो ज्योतिषशास्त्र में शैक्षिक प्रबन्धक के मूल आधार स्पष्ट रूप से दृग्गोचर होते हैं। वस्तुतः ज्ञान शाश्वत रहता है। उसको प्रकट करने का

स्वरूप बदलता जाता है जबकि उसका मूल हमेशा विद्यमान रहता है । इसीलिए सूर्यसिद्धान्त में सूर्यांश पुरूष कहते है कि –

श्रृणुष्वैकमनाः पूर्वं यदुक्तं ज्ञानमुत्तमम् ।
युगे युगे महर्षीणां स्वयमेव विवस्वता।।
शास्त्रमाद्यं तदेवेदं यत्पूर्वं प्राह भास्करः ।
युगानां परिवर्तेन कालभेदोऽत्र केवलः ।।

(सूर्यसिद्धान्त मध्यमाधिकार श्लोक 08–09)

1.5 सारांश

प्रस्तुत इकाई के माध्यम से हमने शिक्षा के क्षेत्र में ज्योतिष शास्त्र की उपयोगिता को जाना। जैसा कि सर्वप्रथम आपने जाना कि ज्योतिष शास्त्र का स्वरूप क्या है? एवं इसकी महत्ता आदि काल से अद्यावधि किस प्रकार से है? ज्योतिष शास्त्र काल विधान शास्त्र है जो कि मानव के कल्याण हेतु सदैव मार्गदर्शन प्रदान करता है । साथ ही साथ आपने जाना कि एक सभ्य समाज के निर्माण के लिए शिक्षा का महत्वपूर्ण स्थान है, क्योंकि शिक्षा ही मानव को एक सभ्य नागरिक बनाती है। शिक्षा के बिना मानव पशु के समान माना जाता है। शिक्षा के विभिन्न क्षेत्र में ज्योतिष शास्त्र अत्यंत उपकारक है। ये भी आपने विस्तार रूप से जाना कि किस प्रकार शैक्षिक प्रबंधन में ज्योतिष शास्त्र अपनी महत्ता सिद्ध करता है साथ ही मानव जीवन में आजीविका का निर्धारण प्रायः उसके द्वारा अर्जित की गई शिक्षा के माध्यम से ही होता है एवं मानव कौन सी शिक्षा ग्रहण करे? जिससे कि वह जीवन में सफलता अर्जित कर सकता है इसके लिए ज्योतिष शास्त्र के अनुसार जातक की जन्मकुंडली की ग्रह स्थिति एवं दशा अंतर्दशा के माध्यम से तथा संस्कारों में उसकी रुचि के अनुसार शिक्षा चयन में ज्योतिष शास्त्र महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। वर्तमान में जो अवसाद की स्थिकत युवाओं में देखने को मिलती है यदि उनका आरंभ से ही ज्योतिष शास्त्र के माध्यम से काउन्सलिग आदि की जाये तो उनकी रुचि एवं ग्रह स्थिति के अनुसार अच्छी शिक्षा का चयन कर अच्छे रोजगार की प्राप्ति संभव हो सकती है। इस प्रकार आपने जाना कि शिक्षा के क्षेत्र में ज्योतिष शास्त्र की महान् उपयोगिता है।

1.6 शब्दावली

सार्वभौम उपयोगिता= सभी जगह में विद्यमान महत्व ।

क्रियाकलाप = शास्त्रानुसार किए जाने वाले कर्म ।

शाश्वत = सदा रहने वाला ।

सन्निवेश = एक साथ रहने की अवस्था या उसी के अंतर्गत होना ।

शीर्षस्थ = सर में होना या रहना ।

बृहत् कलेवर = बड़ा स्वरूप ।

कक्षोपकरण = कक्ष में अध्ययन अध्यापन हेतु उपयुक्त सामग्री ।

मुहूर्तशोधन = उचित मुहूर्त निकालना या शुभ मुहूर्त का ज्ञान ।

संचित कर्म = हमारे द्वारा पूर्व में किए गए कर्म ।

शैक्षिक प्रबंधन = शिक्षा से संबन्धित उपलब्ध संसाधनों का कुशलता पूर्वक या दक्षता पूर्वक उपयोग करना ।

ignou THE PEOPLE'S UNIVERSITY

1.7 बोध प्रश्न

1. ज्योतिष शास्त्र का परिचय एवं महत्व लिखिए।
2. शिक्षा का अर्थ एवं परिभाषाएँ लिखिए।
3. शिक्षा एवं ज्योतिष के अन्तः संबंध को अपने शब्दों में लिखिए।
4. शिक्षा के क्षेत्र में ज्योतिष की उपयोगिता को बताइये।
5. प्रस्तुत इकाई का शीर्षक अपने शब्दों में लिखिए।

1.8 उपयोगी पुस्तकें

1) **लघुपाराशरी**–व्याख्याकार डॉ. सुरकान्तझा– प्रकाशन–चौखम्भासुभारती, वर्ष 2007के 37/117 गोपाल मन्दिर लेन पो. बा.न. 1129, वाराणसी , 22101, दूरभाष–2335263

2) **जातकपारिजात**– व्याख्याकार डॉ. हरिशंकर पाठक–प्रकाशन, चौखम्भासुभारती वाराणसी, संस्करण वर्ष 2012

3) **बृहत्पाराशरहोराशास्त्रम्** –टीकाकार पं. पद्मनाभ शर्मा, चौखम्भासुभारती प्रकाशन वाराणसी, प्रकाशन वर्ष 2012

4) **भारतीय ज्योतिष**–लेखक डॉ. नेमिचन्द्र शास्त्री, भारतीय ज्ञानपीठ संस्करण वर्ष 2002

5) **भारतीय कुण्डली विज्ञान**–लेखक :– मीठालालहिम्मतरामओझा देवर्षि प्रकाशन वाराणसी, प्रकाशन वर्ष 2008 संवत् 2064

6) **सूर्यसिद्धान्तः**टीकाकार – श्रीकपिलेश्वरशास्त्री, प्रकाशकचौखम्भा संस्कृत भवन, पोस्ट बाक्स नं० ११६०चौक, (बैंक ऑफ बड़ौदा बिल्डिंग)वाराणसी –२२१००१ (भारत)

7) **मुहूर्तचिन्तामणि**–टीकाकार –प्रो० रामचन्द्रपाण्डेय, प्रकाशक चौखम्बाकृष्णदास अकादमी, के० ३७⁄११८, गोपाल मन्दिर लेन (गोपाल मन्दिर के उत्तरी फाटक पर)पो० बा० नं० १११८, वाराणसी–२२१००१ (भारत)

8) **ज्योतिष–सिद्धान्त–मञ्जूषा**– लेखक – प्रो० विनय कुमार पाण्डेयः चौखम्भासुभारती प्रकाशन वर्ष 2013(भारतीय संस्कृति एवं साहित्य के प्रकाशक तथा वितरक)के 37–117 गोपाल मन्दिर लेन पां. बा.न. 1129, वाराणसी , 22101

09) **जातकपारिजात**– लेखक – श्रीवैद्यनाथ, चौखम्भा संस्कृत संस्थान, वाराणसी, प्रकाशन वर्ष वि० सं० २०६१ (सन् २००४), चौखम्भा संस्कृत संस्थान, वाराणसी फोन – २३३३४४५

10) **सारावली** – व्याख्याकार–डॉ. सुरकान्त झा, प्रकाशक : चौखम्बाकृष्णदास अकादमी, वाराणसी, के० ३७⁄११८, गोपाल मन्दिर लेन गोलघर (मैदागिन) के पास), संस्करण : द्वितीय, वि०सं० २०७०, सन् २०१३

11) **बृहज्जातकम्** – व्याख्याकार–पं० केदारदत्तजोशी, प्रथम संस्करणः वाराणसी, १९८५, प्रकाशकः मोतीलालबनारसीदास चौक, वाराणसी २२१ ००१

12) **सिद्धान्तशिरोमणि**–व्याख्याकारमुरलीधर ठाकुर कृत, चौखम्बाप्रकाशनके० ३७/११८, गोपाल मन्दिर लेन, गोलघर (मैदागिन) के पास)वाराणसी 221001

13) **भारतीय ज्योतिष का इतिहास एवं परिचय भाग 02,** उत्तराखंड मुक्त विश्वविद्यालय, हल्द्वानी

14) **कल्याण–ज्योतिषतत्त्वांक,** गीताप्रेस, गोरखपुर, वर्षः८८संख्या : १

15) **शिक्षाशास्त्र**– उपकार प्रकाशन (यू.जी.सी.)(द्वितीय प्रश्न–पत्र) लेखक– डॉ. श्याम आनन्द

ignou
THE PEOPLE'S
UNIVERSITY